

International Multidisciplinary  
Research Journal

*Indian Streams  
Research Journal*

Executive Editor  
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief  
H.N.Jagtap

---

## Welcome to ISRJ

**RNI MAHMUL/2011/38595**

**ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho  
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera  
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy  
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila  
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu  
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra  
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian  
University, Oradea, Romania

Mohammad Hailat  
Dept. of Mathematical Sciences,  
University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh  
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu  
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca  
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida  
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN  
Faculty of Philosophy and Socio-Political  
Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir  
English Language and Literature  
Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana  
Dept of Chemistry, Lahore University of  
Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici  
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pinteau,  
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang  
PhD, USA

.....More

### *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade  
ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur

R. R. Patil  
Head Geology Department Solapur  
University, Solapur

Rama Bhosale  
Prin. and Jt. Director Higher Education,  
Panvel

Salve R. N.  
Department of Sociology, Shivaji  
University, Kolhapur

Govind P. Shinde  
Bharati Vidyapeeth School of Distance  
Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar  
Arts, Science & Commerce College,  
Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirottriya  
Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)

Iresh Swami  
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude  
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu  
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar  
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh  
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar  
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary  
Director, Hyderabad AP India.

S. Parvathi Devi  
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,  
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge  
Director, B.C.U.D. Solapur University,  
Solapur

R. R. Yaliker  
Director Management Institute, Solapur

Umesh Rajderkar  
Head Humanities & Social Science  
YCMOU, Nashik

S. R. Pandya  
Head Education Dept. Mumbai University,  
Mumbai

Alka Darshan Shrivastava  
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke  
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S. KANNAN  
Annamalai University, TN

Satish Kumar Kalhotra  
Maulana Azad National Urdu University

अनामिका का साहित्य और स्त्री संवाद



आरिफ गफुर जमादार

Short Profile

Aarif Gafur Jamadhar is a Teacher at sharadachandra Pawar college of Arts commerce and science. He has completed M.A.



सारांश :

विश्व के प्राथनीय किताबों में स्त्री के गर्वान्वित उद्गारों के बाद भी आज स्त्री पीड़ित तथा व्यवस्था की मारी हुई ही रही है। इसका मुख्य कारण स्त्री के आपसी संवादों की पीछे हाट रही है। जहाँ भी स्त्री ने अपने बयान होने में परहेज का नकाब ओढ़ लिया वहाँ वह सदा ही दुष्कर्म तथा अपनी अपहचान का कारण पिराते ही देखी गई। किसी भी अपराध का मूल कारण अपनी पराधीनता का जाहीरनामा प्रकाशित करना ही होता है। आज वर्तमान में इसी पराधर्मी संवाद को स्त्री लेखिकाओं ने अपने साहित्य का आधार घोषित किया है। वह अपने परमशक्ति के प्रमाण में

मनुष्य नीतिव्यवहार के ग्रंथों को अपनी वाणी का सहयोदार्य के रूप में देखती है। अनामिका का साहित्य उसी वीणात्मक गुंजन की मध्य तार है, जो अपनी समवाक्यता से स्मृति के हलचल का प्रमाण संघोती है।

प्रस्तावना

सहितेन तस्य साहित्यः कहकर आचार्य भवभूति ने साहित्य को समाज का अभिन्न अंग घोषित किया। समाज की वाणी ही साहित्य की समझ है। समाज का अर्थ विभिन्न जीव संघटित को अभिमंडित किया हुआ एक रंगमंच है। जिसमें तरह-तरह की जीव वर्णायीत दृश्यों को आत्मसंचलीत कलमकार अपने शब्द संचय से व्यक्त करता है। समकालीन साहित्य उसी दृश्याभास की वाणी है। जिसमें समाज के विभिन्न तबकों की चर्चा आवश्यक मानी जाती है। आज साहित्य की चर्चा तभी पूरी समझी जा सकती है, जब उसमें स्त्री की चेतना और उपेक्षित वर्ग की व्यथा को स्थान दिया जाता है। यह बात आज साहित्य की अभिधा के रूप में है। विषय साहित्य की तरह भारतीय साहित्य भी अपने प्रभावान्वित अक्स के अनुभूति को दर्ज करने में पीछे नहीं है। जिसमें स्त्री का संवाद अहम माना गया है। भारतीय साहित्य ने स्त्री संवाद अखण्डीतता के साथ व्यक्त किया है। भारतीय आराध्य ग्रंथों में जो स्त्री संवाद का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आज के

साहित्य ने निखारालंकृत किया है। मनुसंहिता के नव्वे अध्याय के बारावे श्लोक में कहा गया है—

“अरक्षिता गृहे रूद्धाः पुरुषैराप्त कारिभिः  
आत्मानमात्मना यास्तु रक्षेयुस्ताः सुरक्षिताः”<sup>1</sup>

अर्थात् — घर में बंद तथा विश्वास योग्य और आज्ञाकारी लोगों द्वारा निगरानी रखे जाने पर भी स्त्रियां रक्षिता अर्थात् बची हुई नहीं होती। जो स्त्रियां अपनी रक्षा स्वयं करती हैं, वे ही सुरक्षिता हैं।

वैसे ही, आज समकालीन साहित्य में स्त्री अपनी रक्षा तथा सर्वज्ञता को बयान करने में पीछे नहीं है। स्त्री की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को जहाँ भी समाज ने अनदेखा किया है। वहाँ प्रकृति ने अमानवीयकृत व्यवहार का एक नया अध्याय दृश्यादृश्य से उपस्थित किया है। उस अध्याय से मानवीय संवेदना तो झकझोरकर निकली ही साथ में मनुष्य की निद्रा की मैथुनता को हिंसा का वाकीया मिलता बना। ‘सीमोन द बोडआर’ ने स्त्री की गति और स्थिति को समझाकर ‘द सेकेण्ड सेक्स’ में उसके होने को बयान किया था। वे मानती हैं कि स्त्री अगर बोलना शुरू कर दे तो बिना दूसरों की सहायता लिए अपनी अस्मिता निर्माण कर लेगी। जिसे वर्तमान में अनामिका ने थामा है।

स्त्री कुदरती तौर पर परिवर्तन की आगाज है। इतिहास और विज्ञान के प्रमाथता से भी स्त्री गूणादृश्य का बेहतरीन प्रमाण है। आज पूरा समाज जहाँ स्त्री को भोग्या वसुन्धरा के रूप में अपने कमान से निकलते हुए तीर का शिकार मानता है, तो वहीं स्त्री उस तीर के जख्म से अपनी सियादत का नया वर्ण दर्ज करती हुई देखी गई है। वह अपनी बिरदैतता में कहती है “तुम्हारी माँ—बहने सुरक्षित हैं तो हमारे ही कारण! मरद की हवस के बहुत रंग देख लिए! सारी लल्लो—चम्पो एक ही नरक—कुण्ड में जाकर गिरती है।”<sup>2</sup>

स्त्री के जिस्म को जब एक कामी पुरुष अपना ओढ़ना—बिछौना बना लेता है, तब जीवन की पेचीदा दर्शनात्त्व तहखानों में बंद ताकत को आजमाने के लिए मजबूर कर देती है। स्त्री के पास कुदरत की दी हुई दो अनुपमेय दैहकीय वरदान हैं— एक ‘देह’ और दूसरा ‘देय’। जब स्त्री अपने देह को जीवन का हथियार बनाती है तो वह कहती है— “मैं बस ऊर्जा बोर्ड हूँ और तरह — तरह की आत्माएँ मुझ पर उतरती हैं... एक घंटे से ज्यादा किसी का साथ ढोना नहीं पड़ता, जैसे कि अफेयर में या शादी में कभी—कभी या अक्सर ढोना होता है।”<sup>3</sup> जब वहीं स्त्री अपनी देयत्वता से समाज को कर्मण्यता का पाठ देती है तो कहती है “अपनी खुदी खुद ही सुलगा ले और उसी की रोशनी में आगे बढ़! अपनी ही रोशनी काम आती है। औरतें चोंद बनकर तो बहुत दिन रही, क्या हुआ, यह सबको पता है, अब उनके सूरज बन खुद ही दमक लेने के दिन आए हैं।”<sup>4</sup> स्त्री का संवाद इसी परम्परादर्शगत तत्वों की महानता के साथ स्त्री भुजच्छाया के महानता को दरसाना है।

आज स्त्री पारम्पारिक भूमिकाओं के नकार में परिवार विच्छेद का कारण बन रही है। लेकिन स्त्री के स्वच्छंद और सुविधा संपन्न माहौल में स्त्री के नकार का उत्तर प्राप्त हो रहा है। डॉ. प्रभा खेतान पस्पिमी सभ्यता के नाम पर जपा जाने वाला मंत्रोक्त पथर फेंकते हुए कहती है “पश्चिम में भी औरत देवी है, शक्तिरूपा है, लेकिन व्यवहार में औरत की क्या हस्ती है? वह तो पैर की जूती है, जूती। क्या वह मानव नहीं? शरीर के अलावा उसकी और कोई पूंजी नहीं?”<sup>5</sup> अनामिका इसी नींव पर खड़ी होने वाली मंदीर की क्षेयता को स्त्री यूक्त कर्निष्ठता से व्यक्त करती है “जब जीवन को सपना समझाने की कला साध लेता है आदमी, नींद के सपने गूढाक्षरों की तरह खुलते हैं।”<sup>6</sup>

आज स्त्री जीनत की जिन्दगी बनी है। और यह एक कड़वा सच भी है। करवटों के अलावा उसकी जिन्दगी ‘मैनुफैक्चर’ की तरह ही है। भारतीय संविधान में जहाँ हर भारतीय नागरिक को लोकतंत्र के सर्वोच्च और मौलिक अधिकार माहिल करता है, फिर भी, आज स्त्री को अपने मनुस अक्स की तलाश में मारे—मारे भटकना पड़ता है। आजादी के बाद भी बेखौफ वाली जिन्दगी स्त्री स्मृति के परे ही रही। आज स्त्री अपनी ही तलाश में अपनी ही गुम होने की एफ. आय. आर. दर्ज करती हुई देखी जा सकती है। वह कहती है—

“धरती की तरह मगर इनका  
तय नहीं है कोई ग्रहपथ  
और वे हँसती हुई — सी  
एक दूसरे से है

बर बार टकराती।”<sup>7</sup>

आज स्त्री का जीवन द्रौपती की उस चीख की तरह है, जिसमें उसके सम्मुख धरती के सबसे बड़े ‘संसत्यार्थी’, ‘संबलिष्ठार्थी’, ‘संतीक्षार्थी’ तथा ‘संचतुष्टार्थी’ होकर भी उन्हें उनके नींद से बेदार नहीं कर पाती है। क्या विंडबना है! जिसके लिए धरती बनाई गई, सवांरी—सजायी गई उसे ही अपने हयात होने का प्रमाण दुनियावी अदालत में तारीख—ब—तारीख पेश करना पड़ रहा है। इसका कारण समय का अपने बाहुबल से सब पर हुक्म बजाना है। अगर इस बाहुबल का संधान किया जाए—तो कहा जा सकता है — कि ‘धन’ की गुंजनता से ‘मन’ की मजबूरी का फायदा उठाकर स्त्री के ‘तन’ को प्राप्त किया गया है। चाहे आज चन्द सेकन्दों का बना विज्ञापन ही क्यों न हो उसमें कम—से—कम स्त्री तन के हाथ का जायका तो आज एक रिवाज बन गया है। आज शब्द युग्म को इसी कारण महत्त दिखलाई गयी है।

अनामिका का साहित्य इसी लिंग नैरुक्त की निपुणता को अपने कर्म तथा ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त हुए ज्ञान को पूरे अभाज्यता से उपस्थित करती है। वे समाज के आधार बने ‘जाति’, ‘लिंग’ और ‘अर्थ’ के तीन भेदों में ‘लिंग’ की भेदवार्ता को अहम मानती है कि, उन्हें पता है मनुष्य के मृत्युनादिता से ज्यादा दुःख सपनों के अपूर्णता से होती है।

### संदर्भ सूची

1. मनु संहिता 9 / 12
2. अनामिका, दस द्वारों का पींजरा, राजकमल प्रकाशन, आवृत्ति 2009, नई दिल्ली. पृ. 207.
3. अनामिका, तिनका तिनके पास, वाणी प्रकाशन, सं. 2008 नई दिल्ली, पृ. 173
4. अनामिका, तिनका तिनके पास, वाणी प्रकाशन, सं. 2008 नई दिल्ली, पृ. 251
5. युध्दरत आम आदमी, रमणिका गुप्ता बर्ष 3, अंक 20, मई 2015 पृ. 6
6. अनामिका, तिनवण तिनके पास वाणी प्रकाशन, पृ 31
7. अनामिका, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011 पृ. 95

# Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

## Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : [www.isrj.org](http://www.isrj.org)